Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि

Dr. Meenu*

PhD (Hindi) Gram & Post- Kharawar, District-Rohtak, Haryana

सार – ***वस्तुतः 'सरस्वती' पत्रिका ने भाषा और साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में परिष्कार किया। कितने ही नए-नए कवि और लेखक प्रकाश में आए, देशप्रेम, चरित्र-निर्माण की भावनाएं विकसित हुई, देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की चेतना विकसित करने में भी इस पत्रिका का विशिष्ट योगदान रहा है। राष्ट्रप्रेम की यह भावना तत्कालीन विदेशी शासन के विरूद्ध एक संग्राम का सूत्रपात करने का प्रयास था, शायद इसी कारण सरकार ने 'भारत-भारती' को जब्त कर लिया। जिसमें भारत के अतीत का गौरव गान था। गुप्त जी की राष्ट्रीय चेतना इस कृति से पूर्णतः मुखरित हुई।***

----------X----------

गुप्त जी ने राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागृति और नैतिक मूल्यों पर बल देते हुए अपनी रचनाओं से जन-मन को प्रेरित करने का स्तुत्य प्रयास किया। इस धारा के सभी कवि नव जागरण, राष्ट्रीयता स्वदेशानुराग एवं स्वदेशी भावना से परिपूर्ण है। राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि निम्न प्रकार से हैं-

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
2. रायदेवी प्रसाद 'पूर्ण'
3. रामचरित उपाध्याय
4. गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही'
5. रामनरेश त्रिपाठी
6. माखनलाल चतुर्वेदी
7. सियारामशरण गुप्त
8. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
9. सुभद्रा कुमारी चैहान
10. जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'
11. रामधारी सिंह 'दिनकर'
12. सोहन लाल द्विवेदी
13. श्याम नारायण पाण्डेय
14. मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त:

इनका जन्म चिरगांव (झांसी) में 1886 ई. में तथा निधन 1964 ई. में हुआ। वे हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं। मैथिलीशरण गुप्त रामभक्त कवि थे। 'साकेत' रामकथा पर आधारित महाकाव्य है, जिसके नवम् सर्ग में उर्मिला का विरह-वर्णन विशद् रूप से किया गया है। यह उनकी मौलिक उद्भावना है, क्योंकि उर्मिला रामकथा का उपेक्षित पात्र रही है। गुप्त जी ने लगभग 40 कृतियां लिखीं, जिनमें प्रमुख हैं-

जयद्रथ वध	1910 ई.
भारत-भारती	1912 ई.
पंचवटी	1925 ई.
झंकार	1929 ई.
साकेत	1931 ई.
यशोधरा	1932 ई.

www.ignited.in

द्वापर	1936 ई.
जय भारत	1952 ई.
विष्णुप्रिया	1957 ई.

मैथिलीशरण की कुछ प्रसिद्ध पंक्तियां:

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

(भारत-भारती)

जिसको नहीं गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं नरपशु निरा है, और मृतक समान है।।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी,

आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।

रामधारी सिंह दिनकर:

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर 1908 को आज के बिहार राज्य में पड़ने वाले बेगूसराय जिले के सिमरिया ग्राम में हुआ था। उनकी मृत्यु 24 अप्रैल 1974 को हुई थी। कुछ कवि जन कवि होते हैं तो कुछ को राष्ट्रकवि का दर्जा मिलता है, मगर एक कवि राष्ट्र कवि भी हो और जन कवि भी, यह इज्जत बहुत ही कम कवियों को नसीब हो पाती है। रामधारी सिंह दिनकर जी ऐसे ही कवियों में से एक हैं जिनकी कविताएं किसी अनपढ़ किसान को भी उतनी ही पसंद हैं जितनी कि किसी रिसर्च करने वाले स्कॉलर को। दिनकर जी की कुछ प्रसिद्ध रचनाएं निम्न हैं-

रेणुका, द्वंद्वगीत, प्रणभंग, कुरुक्षेत्र, हुंकार, सामधेनी, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी।

रामधारी सिंह दिनकर की कुछ प्रसिद्ध पंक्तियां-

जला अस्थियां बारी-बारी

चिटकाई जिनमें चिंगारी,

जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर

लिए बिना गर्दन का मोल

कलम, आज उनकी जय बोल।

तलवारें सोतीं जहां बन्द म्यानों में,

किस्मतें वहां सड़ती हैं तहखानों में,

बलिवेदी पर बालियां-नथें चढ़ती हैं,

सोने की ईंटें, मगर, नहीं कढ़ती हैं।

पूज रहा है जहां चकित हो जन-जन देख अकाज

सात वर्ष हो गए राह में, अटका कहां स्वराज?

माखनलाल चतुर्वेदी:

इनका जन्म 1889 में मध्य प्रदेश के जिला होशंगाबाद के गांव बाबई में हुआ था। इनके पिता गांव के स्कूल में अध्यापक थे, इसलिए उनकी आरंभिक शिक्षा वहीं हुई। आरंभ में ये क्रांति के दर्शन से प्रभावित हुए थे, किन्तु बाद में इनकी आस्था गांधीवादी की ओर हुई। इनका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' था। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी कार्यशील रहे और इन्होंने प्रभा, प्रताप तथा कर्मवीर का सम्पादन किया। अपनी राजनीतिक सक्रियता के कारण इन्हें कई बार बन्दी बनाया गया। जेल के जीवन काल में इन्होंने अनेक कविताओं की रचना की। इन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा देशवासियों को संघर्ष और साधना के मार्ग पर चलने की पे्ररणा दी। इनकी रचनाओं का प्रधान स्वर राष्ट्र-प्रेम और आत्मोत्सर्ग का है। इनकी कुछ रचनाएं निम्न प्रकार से हैं-

1. हिमकिरीटनी
2. साहित्य देवता
3. हिमतरंगिनी
4. युगराज
5. कृष्णार्जुन (नाटक)

माखन लाल चतुर्वेदी की कुछ प्रसिद्ध पंक्तियां-

मुझे तोड़ लेना वन माली, उस पथ में देना तुम फेंक

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।

"जाओ, जाओ, जाओ प्रभु को पहुँचाओ स्वदेश संदेश।

गोली से मारे जाते हैं भारतवासी हे सर्वेश।।"

www.ignited.in

"सूली का पथ ही सीखा हूं, सुविधा सदा बचाता आया।

मैं बलि पथ का अंगारा हूं, जीवन ज्वाला जलाता आया।।"

सुभद्रा कुमारी चौहान:

सुभद्रा कुमारी चैहान का जन्म प्रयाग जिले के निहालपुर गांव में हुआ था। इन्होंने प्रयाग में ही शिक्षा ग्रहण की। सन् 1921 में असहयोग आन्दोलन के प्रभाव से इन्होंने शिक्षा अधूरी ही छोड़ दी और ये राजनीति में सक्रिय भाग लेने लगीं। इनकी कविताएं 'त्रिधारा' और 'मुकुल' में संकलित हैं। इनकी 'झांसी की रानी' कविता तो सामान्य जनता में बहुत प्रसिद्ध हुई है। इनकी कविताओं को दो वर्गों में रखा गया है। प्रथम वर्ग में राष्ट्र-पे्रम की कविताएं रखी जा सकती हैं, जिनमें इन्होंने असहयोग या आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले वीरों को अपना विषय बनाया है। सुभद्रा कुमारी चैहान की कुछ प्रसिद्ध रचनाएं निम्न हैं-

झांसी की रानी, त्रिधारा (काव्य संग्रह), मुकुल (काव्य संग्रह)।

इनकी कुछ प्रसिद्ध पंक्तियां-

मुझे छोड़कर तुम्हें प्राणधन सुख या शांति नहीं होगी।

यही बात तुम भी कहते थे सोचो, भ्रान्ति नहीं होगी।

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।

बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी।।

सियाराम शरण गुप्त:

इनका जन्म 1895 में उत्तर के जिला झांसी के चिरगांव नामक ग्राम में हुआ था। ये मैथिलीशरण गुप्त के छोटे भाई थे। रोग एवं पारिवारिक दुःखों के कारण इनका जीवन अत्यंत दुःखमय रहा। वैसे ये सरसता एवं नम्रता की प्रतिमूर्ति थे। इनकी पहली रचना सन् 1910 में 'इन्दू' पत्रिका में प्रकाशित हुई। इसके बाद 'सरस्वती' में कई रचनाएं छपीं। इनकी भाषा शैली सरल और स्पष्ट है तथा इन्होंने बड़ी सफलता के साथ मुक्त छन्द का प्रयोग किया है। सियाराम शरण गुप्त की कुछ प्रसिद्ध रचनाएं निम्न हैं-

मौर्य विजय, अनाथ, दूर्वादल, विषाद, आद्रा, पाथेय, मृण्मयी, बापू।

इनकी कुछ प्रसिद्ध पंक्तियां-

हम सब के थे प्यारे बापू।

सारे जग से न्यारे बापू।।

माली! देखो तो तुमने यह कैसा वृक्ष लगाया है।

कितना समय हो गया, इसमें नहीं फूल भी आया है।।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों ने जनता में देश के प्रति प्रेम और भक्ति की भावनाएं उत्पन्न करने का प्रयास किया है। जिस देश ने हमें जीवन दिया है, जिसकी धूल में पलकर हम बड़े हुए हैं, क्या हम उसके दुःखों की उपेक्षा करके जीवन को सार्थक कर सकते हैं ? स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के संघर्ष काल में प्रत्येक भारतवासी का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य था- देश की स्वाधीनता के लिए साधना करना। इस धारा के सभी कवियों ने देश के अतीत के गौरव के प्रति अटूट श्रद्धा तो व्यक्त की ही है, साथ ही उनका यह दृढ़ विश्वास भी है कि देश पराधीनता और अत्याचार के दमन चक्र से मुक्त होगा और फिर से एक नयी, विराट और भव्य सामाजिक व्यवस्था का उदय होगा।

संदर्भ:

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास

डॉ. अशोक तिवारी, प्रतियोगिता साहित्य

डॉ. शशिभूषण सिंहल, हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल: गद्य

डॉ. दिलीप पाण्डेय, उपकार

ट्रयूमैनस स्पेशिफिक सिरीज

Corresponding Author

Dr. Meenu*

PhD (Hindi) Gram & Post- Kharawar, District- Rohtak, Haryana

www.ignited.in